क्या हम बाइबल को एक ही तरह समझ सकते हैं

यह एक दुखद सच्चाई है कि आज लोग बाइबल का अध्ययन बहुत कम करते हैं। बहुत से लोग परमेश्वर के वचन को न ही पढ़ते हैं और न ही इसका अध्ययन करते हैं। इसके कई कारण हैं। (1) उदासीनता के कारण वे इसे पढ़ने में असफल रहते हैं। बहुत से लोग बाइबल के प्रति पूर्णत: उदासीन हैं। उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि यह सच्ची है या नहीं। उनकी इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। (2) दूसरे लोग धार्मिक विषयों के प्रति थोड़ी-बहुत दिलचस्पी लेते हैं परन्तु वे बाइबल का अध्ययन इसलिए नहीं करते क्योंकि उन्हें इसके महत्व का अहसास नहीं है। उन्होंने ऐसे भोजन को खाने की आदत ही नहीं डाली। (3) ऐसे भी लोग हैं जो परमेश्वर की सच्चाई के दर्पण के सामने नहीं आना चाहते क्योंकि इससे उनका घृणित चेहरा दिखाई देता है। उन्हें अपने आपको दर्पण में देखना अच्छा नहीं लगता। (4) एक और तरह के लोग हैं जो बाइबल का अध्ययन इसलिए नहीं करते क्योंकि उनके मन में यह बात बैठी हुई है कि इसे समझा नहीं जा सकता।

हमारा यह पाठ बाइबल के विषय में समझने की बात करते हुए अधिकतर चौथी प्रकार के लोगों पर केन्द्रित रहेगा।

क्या हम इसे समझ सकते हैं?

यह विचार कि बाइबल को समझा नहीं जा सकता, रोमन कैथोलिक कलर्जी का आविष्कार है। इस थ्योरी का आविष्कार लोगों को उनकी स्वतन्त्रता से वंचित रखने के लिए याजकों [प्रीस्ट लोगों] ने ही किया था। उनका कहना है कि बाइबल साधारण लोगों के लिए नहीं है, अर्थात यह कि इसकी आधिकारिक व्याख्या के लिए उन्हें चर्च में आना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने अपने सदस्यों को एक असहाय प्रजा बना दिया है।

बाइबल स्पष्ट करती है कि इसे केवल कुछेक अतिविश्वासी अधिकारियों के लिए ही नहीं, बल्कि सब लोगों के लिए दिया गया है। मसीही लोगों को ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने'' देने की आज्ञा दी गई है (कुलुस्सियों 3:16)। हमें ''नये जन्मे

हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा'' करने का उपदेश मिला है (1 पतरस 2:2)। पौलुस ने कहा था कि बाइबल हमारी शिक्षा के लिए लिखी गई है (रोमियों 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:11)। उसने आज्ञा दी थी कि उसकी पत्री *सब* पवित्र भाइयों में पढ़ी जाए (1 थिस्सलुनीकियों 5:27)। यदि बाइबल साधारण लोगों के लिए नहीं है तो फिर इन वाक्यों का क्या अर्थ है? क्या परमेश्वर ने हमें कोई ऐसी बात पढ़ने की आज्ञा दी है जिसे हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते? यदि ऐसा है, तो फिर इन दो वाक्यों में से एक सत्य होना चाहिए: या तो परमेश्वर हमें इसे ऐसे नहीं दे पाया जिससे हम इसे समझ पाते, या उसने इसे देना ही नहीं चाहा। यह कहना कि वह दे नहीं सका, उसकी सामर्थ पर आरोप लगाना और यह कहना कि उसने देना नहीं चाहा, उसके भला होने का इन्कार करना है। निश्चय ही, हम नहीं मान सकते कि यह जानते हुए कि लोग इसे समझेंगे नहीं, परमेश्वर हमें ऐसा प्रकाशन देकर उसे पढ़ने की आज्ञा देता।

क्या हम इसे एक ही तरह समझ सकते हैं?

कुछ लोग यह तो मानते हैं कि हम बाइबल को समझ सकते हैं, फिर भी ज़ोर देते हैं कि हम सब इसे एक ही तरह नहीं समझ सकते। यह वैसा ही विचार है जिसकी बात हमने पहले की थी, परन्तु यह उसका सुधरा हुआ रूप है। यह वही विवाद है जो प्रीस्ट लोगों ने बाइबल को समझने की हमारी अयोग्यता के बारे में पैदा किया है। हमारी पहली बातें फिर यहां पर लागू होती हैं: यदि परमेश्वर ने हमें ऐसा प्रकाशन नहीं दिया जिसे हम एक ही तरह समझ सकते हैं, या तो वह दे नहीं सकता था या वह देना नहीं चाहता था।

निश्चय ही परमेश्वर ऐसा संदेश दे सकता है जिसे समझा जा सकता हो; और यदि उसे सभी समझ सकते हैं, तो उन्हें उसे एक ही तरह समझना चाहिए। यह तो हो सकता है कि कोई बाइबल को गलत ढंग से समझे, परन्तु यह नहीं हो सकता कि हम इसको अलग ढंग से समझें।

हम यह निष्कर्ष निकालने पर बाध्य होते हैं कि यदि परमेश्वर ने ऐसा प्रकाशन नहीं दिया जिसे हम एक ही तरह समझ सकते, तो यह इसलिए था क्योंकि वह नहीं चाहता था कि हम इसे समझें। परन्तु, वह चाहता है कि हम इसे समझें! वह चाहता है कि लोग एक ही बात पर सहमत हों। नया नियम एकता के लिए आग्रह करता है (यूहन्ना 17:21; 1 कुरिन्थियों 1:10)।

क्या एक ही तरह समझे बिना एकता हो सकती है? *नहीं!* ''यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों, तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?'' (आमोस 3:3)। इसलिए, एकता के लिए बाइबल का निवेदन ज़ोर देता है कि परमेश्वर हमसे बाइबल को पढ़ने और इसे समझने की अपेक्षा करता है, और इसका अर्थ यह है कि वह हमसे इसे एक ही तरह समझने की आशा करता है। क्या परमेश्वर किसी प्रचारक को पुलपिट पर खड़ा होकर हर रोज उद्धार की नई-नई योजनाएं बनाने की अनुमति देगा? यदि वह यह अनुमति एक प्रचारक को नहीं देता, तो दस भिन्न-भिन्न लोगों को उद्धार की दस भिन्न-भिन्न योजनाओं का प्रचार करने की

अनुमति कैसे दे सकता है ?

धार्मिक भिन्नताएं क्यों हैं?

कोई ज़ोर देकर कह सकता है कि हमारी भिन्नताएं इस बात का प्रमाण हैं कि हम बाइबल को एक ही तरह से नहीं देख सकते। क्या यह सही है ? हमारी कुछ भिन्नताएं क्या हैं ?

धार्मिक जगत धर्मसारों पर बंटा हुआ है। कौन से धर्मसार ? क्या वह धर्मसार बाइबल है ? क्या बाइबल को धर्मसार मानने में किसी को आपत्ति है ? नहीं।

लोग जो मसीह के अनुयायी होने का दावा करते हैं, नामों पर भी बंटे हुए हैं। कौन से नाम ? क्या वह नाम ''मसीही'' है ? नहीं। यह फूट तो उन नामों पर है जो बाइबल में नहीं मिलते।

आराधना करने वाले भी इसी प्रकार बंटे हुए हैं कि बपतिस्मा कैसे होना चाहिए ... कई लोग डुबकी के बपतिस्मे का प्रचार करते हैं, कई छिड़काव का और दूसरे जल उंडेलने को बपतिस्मा कहते हैं। इन विषयों में से हम किस पर बंटे हुए हैं ? क्या किसी को बपतिस्मे में गाड़े जाने पर कोई आपत्ति है ? (कुलुस्सियों 2:12)। नहीं! फूट उन प्रथाओं के बारे में है जो बाइबल में *नहीं मिलतीं* उन शिक्षाओं पर नहीं जो परमेश्वर के वचन में हैं।

सारांश

अपनी बाइबल पढ़िए और इसका अध्ययन कीजिए। आप देखेंगे कि यह ''[आपके] पांव के लिए दीपक, और [आपके] मार्ग के लिए उजियाला'' है (भजन संहिता 119:105)। जितना आप इसे पढ़ेंगे और इसका अध्ययन करेंगे उतना ही आप इसे समझने लगेंगे। ''नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो'' (1 पतरस 2:2)।

बाइबल के पर्याप्त होने को स्वीकार करें। इससे और केवल इससे ही संतुष्ट हों! उन परम्पराओं से विचलित न हों जिनका उल्लेख बाइबल में नहीं है, क्योंकि न समझी और फूट का सबसे बड़ा कारण वे ही हैं। बाइबल से संतुष्ट हों!